एम.एम. कालेज मोदीनगर
हिन्दी विभाग

स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा भाग-1
विषय - 'चन्द्रगुप्त' नाटक
प्रश्नपत्र - बारहवाँ पत्र
समय - 11 बजे से 12 बजे तक 16.7.2020
शिक्षक - डॉ. रचना शर्मा
पाठ - रस विवेचन

प्रिय छात्र-छात्राओ!

पिछली कक्षा में अनुभाव के अन्तर्गत औत्सुक्य, स्मृति, उग्रता जैसे संचारी भावों का उदाहरण नाटक में देखा था। अब, धृति के भी कुछ उदाहरण देखें —

द्वितीय अंक से ही इनको क्रम से देखें :—

'चन्द्रगुप्त — (सिल्यूकस से) जाओ यवन! सिकन्दर का जीवन बच गया तो फिर आक्रमण करना' दर्प का बहुत अच्छा उदाहरण है।

इसी बीच,

सिंहरण — कुछ चिन्ता नहीं। दृढ़ रहो। समस्त मालव-सेना से कह दो कि सिंहरण तुम्हारे साथ मरेगा। यह धृति का उत्तम रूप है।

नंद को आलम्बन मान लेने पर भी उद्दीपन, अनुभाव और संचारी भावों का पूरा योग मिल जाता है। शकटार का नगर के बाहर आकर अपनी दुःखद कहानी कहना, मौर्य और उसकी पत्नी का बंदी होना और राक्षस-सुवासिनी को अंधकूप में डालने का राजा-निर्णय इत्यादि उद्दीपन विभाव हैं।

माता-पिता के दुःख पर चन्द्रगुप्त का क्रुद्ध होना और प्रतिज्ञा करना तथा क्रांति उत्पन्न करने के विविध आयोजन अनुभाव के अन्तर्गत आते हैं। स्मृति, औत्सुक्य इत्यादि संचारी भाव हैं। इस प्रकार सभी अवयवों के संयोग से यहाँ भी 'रस' की पूर्ण दशा उत्पन्न हो जाती है।

सिल्यूकस को यदि आलम्बन माना जाय तो भी रस के विविध अवयव उपस्थित हैं। चाणक्य, सिंहरण के स्वतन्त्र भाव और से चन्द्रगुप्त के उत्साह में स्वावलम्बन-पूर्ण दीप्ति एवं प्रखरता उत्पन्न होती है; इसलिए यह अवस्थाभावना उद्दीपन का काम करती है। इस पर साइबर्टियस के द्वारा सिल्यूकस को चन्द्रगुप्त को समझाने की चेष्टा करना है वह भी उद्दीपन ही है और इसके उत्तर में चन्द्रगुप्त का गर्व आत्म विश्वास के साथ कहना है— 'मैं सिल्यूकस का कृतज्ञ हूँ, तो भी क्षत्रिय हूँ, रणदान जो भी माँगेगा उसे दूँगा। युद्ध होना अनिवार्य है' — अनुभाव के अन्तर्गत आते हैं। पर युद्ध क्षेत्र में जो चन्द्रगुप्त और सिल्यूकस का प्रत्यक्ष आवेशपूर्ण कथन होता है उसमें भी अनुभाव का अच्छा रूप दिखलाई पड़ता है। संचारी में गर्व, औत्सुक्य, धृति, स्मृति इत्यादि यथास्थान नियोजित दिखाई पड़ते हैं।

इस प्रकार सम्पूर्ण नाटक में आदि से अंत तक वीर रस के विभिन्न अवयवों की एक मालिका गुंथी मिलती है।

वीर रस की धारा के साथ प्रेम-व्यापारों का भी योग चलता रहता है। अलका-सिंहरण, सुवासिनी और राक्षस तथा कल्याणी, मालविका और कार्नेलिया के साथ चन्द्रगुप्त इत्यादि के प्रेम के आरम्भ, विस्तार एवं परिपाक की कथा से नाटक भरा है।

15.7.20